एक भला मनुष्य जो खोया हुआ था!
(10:24-48; 11:12-18)

प्रेरितों के काम का 10 वां अध्याय कुरनेलियुस और उसके घराने के मनपरिवर्तन के बारे में बताता है। घटना का महत्व इसको दिए गए स्थान (जो किसी भी अन्य मनपरिवर्तन से अधिक है[1]), के साथ कहानी को विस्तार से दो बार बताकर दिखाया गया है।[2]

अति आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि एक *भले* आदमी का मनपरिवर्तन है! दिवंगत एन. बी. हार्डमैन का एक प्रवचन था ''कुरनेलियुस शेम्ज़ अस (अर्थात कुरनेलियुस हमें शर्मिन्दा करता है),'' जिस में उसने ध्यान दिलाया कि मसीही बनने से पहले भी, कुरनेलियुस हम में से बहुतों से अच्छा था! सी. ब्रूस व्हाइट ने कुरनेलियुस के पांच गुणों पर ज़ोर दिया: (1) *वह एक श्रद्धालु चेला था।* ''वह भक्त था'' और ''परमेश्वर से डरता था।'' बेईमान संसार में वह ईमानदार आदमी था।[3] (2) *वह एक विश्वासी पिता था।* उसने अपने सारे घराने को स्पष्ट रूप से शिक्षा दी थी जिस कारण वे सभी सच्चे परमेश्वर में विश्वास रखते थे (ध्यान दें यहोशू 24:15; इफिसियों 6:4)। (3) *वह दान करने वाला एक गैर यहूदी था।* वह निर्धनों को ''*बहुत* दान देता'' था। (4) *वह प्रार्थना करने वाला था।* वह ''बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था।'' ज़्यादा हैरानी वाली बात यह थी कि (5) *वह एक सम्माननीय रोमी था।* वह ''सारी यहूदी जाति में सुनामी मनुष्य'' था।[4] नियम के अनुसार, यहूदी लोग रोमी सिपाहियों से घृणा करते थे, परन्तु परमेश्वर का भय मानने वाले कुरनेलियुस के मामले में यह अपवाद था।[5] अन्य गुण जोड़े जा सकते थे (*वह एक नम्र सुनने वाला था,* इत्यादि)। निस्संदेह वह एक बहुत अच्छा व्यक्ति था।

फिर भी, कुरनेलियुस खोया हुआ था। स्वर्गदूत ने उसे बताया कि वह पतरस को बुलवाये, ''वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना *उद्धार* पाएगा'' (11:14)। कुरनेलियुस इस सच्चाई का उत्कृष्ट उदाहरण है कि कोई भी व्यक्ति इतना भला नहीं है कि वह अपनी अच्छाई के सहारे उद्धार पा सके। जीवित लोगों में सबसे अधिक भक्त व्यक्ति भी एक पापी है और उसे भी उद्धार की आवश्यकता है (रोमियों 3:23; 6:23)! परमेश्वर और उसके मापदण्डों की तुलना में, ''हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं'' (यशायाह 64:6)। मसीह के लोहू के बिना उद्धार नहीं (इब्रानियों 9:22)! जिस प्रकार कुरनेलियुस और उसके घराने को मसीह के लोहू की

आवश्यकता थी वैसे ही हमें भी है।

आइए अब इस भले मनुष्य के मनपरिवर्तन के बारे में अपना अध्ययन जारी रखें। पहले, हमने ध्यान दिया था कि दीवारों को गिराना कभी भी आसान नहीं रहा। आपने देखा कि कैसे यहूदियों और अन्यजातियों को मिलाने के लिए बार-बार परमेश्वर को हस्तक्षेप करना पड़ा था। इस मनपरिवर्तन में किसी भी अन्य बात से अधिक आश्चर्यकर्मों की घटनाओं की प्रस्तुति है। परिणामस्वरूप, इस मनपरिवर्तन के विषय में सम्भवत: प्रेरितों की पुस्तक में मनपरिवर्तन के सभी वृत्तांतों से अधिक ग़लतफहमी है। मुझे आशा है कि कुछ प्रसिद्ध प्रश्नों का उत्तर इस अध्ययन में मिल जाएगा।

एक भला मनुष्य प्रचारक की प्रतीक्षा करता है (10:24-27)

जब हमारा पिछला पाठ समाप्त होने वाला था, तो याफा से उत्तर की ओर दस मनुष्य अर्थात पतरस, छह यहूदी मसीही और कुरनेलियुस के तीन संदेशवाहक जा रहे थे। उन्होंने रात कहीं रास्ते में ही बिताई; फिर ''दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुंचे,'' (10:24क) जो उनकी मंज़िल थी।

स्वर्गदूत ने कुरनेलियुस को निर्देश दिया था कि वह परतस को बुलवाए, इसलिए इस सूबेदार को पूरा भरोसा था कि वह प्रेरित आएगा। इस कारण ''कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठे करके उन की बाट जोह रहा था'' (10:24क)। कुरनेलियुस ने अनुमान लगाकर कि सफ़र में कितना समय लग सकता है, अपने मित्रों और परिवार के लोगों को लगभग उसी समय बुला लिया होगा, जब वह उनके लौटने की अपेक्षा कर रहा था, या उसके किसी नौकर ने जो पतरस के साथ यात्रा कर रहा था उनके आगे भागकर,[6] कुरनेलियुस को बताया होगा कि वे किस समय इकट्ठे हों?[7] हम नहीं जानते, परन्तु यह तथ्य कि उसके मित्रों और उसके परिवार ने कुरनेलियुस के बुलावे को स्वीकार किया, उस सूबेदार के एक और विलक्षण गुण को प्रकट करता है कि *वह एक प्रभावशाली आमन्त्रक था।*

कुरनेलियुस शायद इस आश्चर्य में कि पतरस, जो कि एक यहूदी था, उसके घर आएगा। प्रेरित को मिलने के लिए बाहर नहीं आया बल्कि अन्दर ही उसकी प्रतीक्षा करता रहा, यहूदियों का विश्वास था कि किसी अन्यजाति की इमारत में प्रविष्ट होने से वे औपचारिक रूप से अशुद्ध हो जाते हैं (आयत 28; तु. यूहन्ना 18:28)। परन्तु, पतरस प्रचार करने के लिए सामने ड्योढ़ी के आगे नहीं आया। जब पतरस कुरनेलियुस के घर के सामने के द्वार से साहसपूर्वक निकला तो पूर्वाद्वेष की एक और दीवार गिर गई थी।

पतरस के अपने घर में प्रवेश करने पर कुरनेलियुस अभिभूत हो उठा। वह भाग कर प्रेरित से मिलने के लिए गया ''और [उसके] पांव पड़के उसे प्रणाम किया'' (आयत 25)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''प्रणाम'' ''भक्ति के एक अर्थ को प्रकट करता है, चाहे वह किसी जीव की हो या सृष्टिकर्ता की।''[8] कुरनेलियुस ने तो पतरस के प्रति परमेश्वर के चुने हुए संदेशवाहक के रूप में सम्मान की इच्छा जताई होगी। रोमी सिपाही का एक यहूदी के आगे अर्थात विजेता का विजयी के सामने झुकना एक अद्‌भुत दृश्य था।[9] इस

समय दीवारें हिलने लगी थीं!

सूबेदार का प्रयोजन कुछ भी रहा हो, परन्तु पतरस ने गलत प्रभाव छोड़ने की अनुमति नहीं देनी थी।[10] प्रणाम केवल परमेश्वर को ही होना चाहिए! (देखिए मत्ती 4:10; 1 कुरिन्थियों 8:4, 6)। पतरस ने जल्दी से यह कहते हुए, उसे ''उठाकर कहा, खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूं'' (आयत 26)। उनमें जो अपने आप को पतरस के वंशज होने का दावा करते हैं, जो मनुष्यों को अपने सामने झुकने की अनुमति देते हैं, और जो अंगूठी वाली अंगुली को चूमने के लिए आगे बढ़ाते हैं, कितनी विषमता है।[11] जिमी ऐलन ने अपनी पुस्तक *द नीड फॉर रिवाइवल में* इस घटना का सम्बन्ध जोड़ा:

> एक बार ''होली फ़ादर'' के साथ (सौ अन्य लोगों के साथ) मैम्फिस [टैनि.] के हार्डिंग ग्रेजुएट स्कूल ऑफ़ रिलिजन के पूर्व डीन, भाई डब्ल्यू. बी. वैस्ट, के श्रोता थे। उसने कहा कि जब पोप कमरे में आया हर कोई अपने घुटनों के बल झुक गया। वह भी झुकने लगा और फिर उसे कुरनेलियुस को कही गई पतरस की बात याद आ गई। यद्यपि अशिष्ट होने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी, परन्तु वह सीधा खड़ा रहा।

पतरस और कुरनेलियुस ने इस सूबेदार के घर में घूमते हुए, एक दूसरे के साथ बराबर के लोगों की तरह बातें कीं (आयत 27क)। जब वे कमरे में पहुंचे जहां कुरनेलियुस के मित्र और परिवार प्रतीक्षा कर रहे थे, तो प्रेरित निश्चय ही हैरान था। उसने कुरनेलियुस के परिवार के बहुत निकट के लोगों और उसके नौकरों के होने की अपेक्षा की होगी। इसके स्थान पर उसने ''*बहुत* से लोगों को इकट्ठे'' देखा। (आयत 27ख)। जो कुछ पतरस ने देखा होगा उसकी व्याख्या एक लेखक ने इस प्रकार की है:

> उसने कमरे में चारों तरफ से संगमरमर और चित्रकारी किए हुए फर्श, रोमी मेज़ों और दीवानों से सजे हुए व रेशमी पर्दे लटकते हुए देखे। उसने पुरुषों तथा महिलाओं को रोमी पहनावे और चोगे पहने, सिपाहियों को उनके विभिन्न रैंकों तथा वर्दियों में, दासों को द्वारों में से झांकते हुए देखा ...।

तीन दिन पहले, पतरस को यह असम्भव लगता होगा कि शीघ्र ही ऐसे समूह से घिरा, वह एक गैरयहूदी की छत के नीचे होगा, परन्तु अब वह सचमुच ही वहां था! उन तीन दिनों में पतरस के जीवन और हृदय में बहुत कुछ घटा था!

एक भला मनुष्य सुसमाचार को ध्यान से सुनता है (10:28-43)

प्रेरित ने वहां एकत्र हुए लोगों से बात की।[12] ''तुम जानते हो, कि अन्यजाति की संगति करना[13] या उसके यहां जाना यहूदी के लिए अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है, कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूं'' (आयत 28)। जब आवाज़ ने यह

कहा, ''जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह'' (10:15) उस समय विषय *भोजन* था। परन्तु, बाद के तीन दिनों के लिए पतरस ने उसकी प्रासंगिकता यहां बना ली थी: ''परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है, कि *किसी मनुष्य को* अपवित्र या अशुद्ध न कहूं।''

पतरस ने कहना जारी रखा: ''इसीलिए मैं जब बुलाया गया; तो बिना कुछ कहे[14] चला आया'' (आयत 29क)। पतरस ने आरम्भ में अशुद्ध जानवरों को मारने और खाने पर आपत्ति की थी, परन्तु संदेशवाहकों के साथ चलने पर दर्शन की तिहरी ख़ुराक के साथ आत्मा की स्पष्ट आज्ञा के बाद, पतरस ने कोई आपत्ति नहीं की। ''अब मैं पूछता हूं कि मुझे किस काम के लिए बुलाया गया है?'' (आयत 29ख)।

कुरनेलियुस ने स्वर्गदूत के आने के बारे में बताया। ''इस घड़ी पूरे चार दिन हुए[15]'' उसने कहा, ''कि मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था; कि देखो, एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहिने हुए, मेरे साम्हने आ खड़ा हुआ'' (आयत 30)। कुरनेलियुस ने स्वर्गीय संदेशवाहक के निर्देशों को उद्धृत करके संक्षेप में बताया, ''तब मैंने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तू ने भला किया, जो आ गया: अब हम सब यहां परमेश्वर के साम्हने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें'' (आयत 33)। चाहे अन्यजाति ही थे, परन्तु वे प्रचारक का सच हुआ सपना थे। इकट्ठे हुए ये लोग ड्यूटी या आदत या मिलने या मनोरंजन लेने के लिए नहीं, बल्कि वे उन बातों को सुनने के लिए इकट्ठे हुए थे, जिनकी परमेश्वर ने आज्ञा दी थी!

पतरस प्रभावित हुए बिना न रह सका। ''तब पतरस ने मुंह खोलकर[16] कहा; अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है'' (आयतें 34, 35)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''किसी का पक्ष नहीं करता'' ''चेहरे'' के लिए शब्द को ''लेना या पाना'' के साथ जोड़ता है। यह मूलत: केवल ''चेहरे'' को देखकर पाने (या ठुकराने) अर्थात, केवल ऊपरी गुण के लिए प्रयुक्त होता था।[17] परमेश्वर किसी का न्याय ऊपरी बातों जैसे – राष्ट्रीयता, जीवन में स्थिरता या सम्पत्तियों के आधार पर नहीं करता[18] बल्कि, वह प्रत्येक व्यक्ति के हृदय और जीवन को देखता है! ''हर जाति में जो [पुरुष या स्त्री] उससे डरता और धर्म के काम करता है,[19] वह [यहूदी हो या अन्यजाति] उसे भाता है!''[20]

हम में से बहुत से लोगों ने ये आयतें इतनी बार सुनी होंगी कि इनके आश्चर्य पर हमारा ध्यान नहीं जाता। इस सच्चाई का अहसास पतरस के लिए उतना ही चौंकाने वाला और जीवन बदलने वाला था, जितना शाऊल को यीशु का दर्शन! परमेश्वर सभी लोगों का स्वागत कर रहा था जिनमें मैं और आप भी शामिल हैं!

यहूदी मसीहियों के लिए अन्यजातियों को स्वीकार करने के लिए तैयारी का यह दूसरा कदम था क्योंकि गैर यहूदियों में सुसमाचार का पहली बार प्रचार किया जाना था। पतरस ने फिर से ''स्वर्ग के राज्य की कुंजियों'' (मत्ती 16:19) का इस्तेमाल करना था। 36 से 43 आयतें पतरस के प्रवचन का संक्षिप्त विवरण[21] देती हैं। पतरस ने यीशु के जीवन और कामों की रूपरेखा देते हुए आरम्भ किया:[22]

> जो वचन उस ने इस्राएलियों के पास भेजा,[23] जब कि उस ने यीशु मसीह के द्वारा[24] (जो सब का प्रभु है[25]) शान्ति का सुसमाचार सुनाया। वह बात तुम जानते हो[26] जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार[27] के बाद गलील से आरम्भ होकर सारे यहूदिया में[28] फैल गई कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी का पवित्र आत्मा और सामर्थ[29] से अभिषेक किया: वह भलाई करता,[30] और सबको जो शैतान के सताए हुए थे,[31] अच्छा करता फिरा;[32] क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।[33] और हम उन सब कामों के गवाह हैं;[34] जो उस ने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए (पद 36-39क)।

फिर पतरस यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की बात करके सुसमाचार का सार में देने लगा:

> और उन्होंने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला।[35] उस को परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है।[36] सब लोगों को नहीं वरन उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से चुन लिया था,[37] अर्थात हमको जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया पीया[38] (आयतें 39ख-41)।

पतरस अपने प्रवचन को समेटने लगा:

> और उस ने हमें आज्ञा दी, कि लोगों में प्रचार करो;[39] और गवाही दो, कि यह वही है; जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है।[40] उस की सब भविष्यवक्ता गवाही देते हैं,[41] कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा[42] पापों की क्षमा मिलेगी (आयतें 42, 43)।

पतरस अपने श्रोताओं को यह बताने कि उन्हें क्या करना चाहिए (तु. 2:38; 10:48) और अपने परामर्श को आरम्भ करने (तु. 2:40) के लिए तैयार था, परन्तु इस प्रवचन में रुकावट पड़ गई। पतरस को अपने प्रवचनों के अन्त में कठिनाई आती थी। जब उसने पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों में प्रचार किया तो उसका प्रवचन व्यथित पापियों द्वारा रोक दिया गया था जो पुकार उठे थे, ''हम क्या करें?'' (2:37)। जब उसने लंगड़े आदमी को चंगा करने के बाद प्रचार किया, तो उसके प्रवचन में उन लोगों ने रुकावट डाल दी थी जो उसे गिरफ्तार करने आए थे (4:1-3)। इस बार उसके प्रवचन को परमेश्वर ने रोक दिया था।

एक भले मनुष्य को आत्मा मिलता है (10:44-46; 11:15-17)

यहूदी मसीहियों को अन्यजातियों को ग्रहण करने हेतु मनाने के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण कदम था। जिस प्रकार परमेश्वर ने कुरनेलियुस और पतरस को तैयार करने के लिए चमत्कारी शक्तियों का इस्तेमाल किया था, वैसे ही उसने कलीसिया को तैयार करने के लिए अपनी सामर्थ का फिर से इस्तेमाल किया:

> पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर

> उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए[43] कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना[44] (10:44-46)।

वाक्यांश ''पवित्र आत्मा का दान'' पवित्र आत्मा से मिले दान या दान के रूप में पवित्र आत्मा में से किसी के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है। 2:38 में इसका इस्तेमाल दान के रूप में पवित्र आत्मा के लिए हुआ है।[45] इस पद में यह पवित्र आत्मा से मिले विशेष दान के लिए, विशेषकर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के लिए प्रयुक्त हुआ है। हमें इसका पता अध्याय 11 में पतरस की व्याख्या के कारण चलता है कि क्या हुआ:

> जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था। तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उस ने कहा;[46] कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। सो जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता (11:15-17)।

इस पद में ''हम'' प्रेरितों को कहा गया है। प्रेरित ही थे जिन्हें प्रभु ने कहा था, ''तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (1:2-5)। पतरस ने ''कुरनेलियुस के घराने और पिन्तेकुस्त के दिन विश्वास करने वाले उन तीन हज़ार लोगों (तु. 11:15; 15:8) के बजाय कुरनेलियुस के घराने और मूल चेलों में समानता'' बनाई (आयत 47)। पतरस ने ज़ोर दिया कि कुरनेलियुस और उसके घराने ने ''वही दान'' पाया था (वहां ''दान'' शब्द मिलता है) जो उसने और अन्य प्रेरितों ने पाया था अर्थात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा।

संयोग से, यह हमें बताता है कि वे ''भाषाएं'' जिनमें कुरनेलियुस और उसके दोस्त बोले थे, तथाकथित ''भावविभोर शब्द'' नहीं, बल्कि अस्थाई भाषाएं थीं,[47] क्योंकि उन्होंने भी ''*वही* दान''[48] पाया था जो प्रेरितों ने पाया था और प्रेरितों ने अपने समय में बोली जाने वाली भाषा का ही इस्तेमाल किया था (2:4, 6, 8)।[49] यह बाहरी प्रदर्शन यहूदी गवाहों के लिए आवश्यक था ताकि वे देख और जान लें कि गैरयहूदियों को आत्मा का बपतिस्मा मिला था।

''आरम्भ में'' शब्द भी महत्वपूर्ण हैं। पतरस प्रेरितों 10 अध्याय की घटना की कुछ दिन, सप्ताह, या महीने पहले पवित्र आत्मा के बपतिस्मा पाने के साथ तुलना नहीं कर पाया। उसे प्रेरितों 2 अध्याय में कई वर्ष पहले घटी घटना की ओर लौटना पड़ा था:

> पतरस की टिप्पणी यह तथ्य उजागर करती है कि अन्यजातियों के परिवर्तित होने का अनुभव भी वैसा ही था जैसा *आरम्भ में,* अर्थात, पिन्तेकुस्त के दिन, मूल

प्राप्तकर्त्ताओं का था। (हावर्ड मार्शल)

यह रोचक बात है कि पतरस को कुरनेलियुस के घर में हुई घटना के उदाहरण को खोजते हुए बहुत पीछे पिन्तेकुस्त के दिन में जाना पड़ा! यह सुझाव देता है कि ''आत्मा के (नाटकीय) बपतिस्मे'' (प्रेरितों 11:16) के साथ भाषाएं बोलना, आरम्भिक कलीसिया में हर रोज़ होने वाली घटना नहीं थी। (वारेन विपर्सबे)

जैसे पहले ध्यान दिया गया कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की केवल दो ही घटनाएं प्रेरितों 2 और प्रेरितों 10 में मिलती हैं।

परमेश्वर ने अपना आत्मा कुरनेलियुस और उसके मित्रों पर क्यों उंडेला? कई लोगों का कहना है कि यह अन्यजातियों के उद्धार के लिए था।[50] स्पष्ट तौर पर यह ग़लत है। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से प्रेरितों 2 अध्याय में प्रेरितों का उद्धार नहीं हुआ; इससे प्रेरितों 10 में कुरनेलियुस का उद्धार नहीं हुआ। यदि अन्यजातियों को परमेश्वर द्वारा सीधे उद्धार दिया जाना था, तो पतरस को भेजने का कोई औचित्य नहीं था। परमेश्वर के संदेशवाहक ने कहा था कि कुरनेलियुस और उसके घराने का उद्धार *वचन* से होना था, आत्मा के बहाये जाने से नहीं (11:14)।

एक और प्रसिद्ध विचार है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा यह दिखाने के लिए था कि कुरनेलियुस और उसके घराने का *पहले ही* उद्धार हो चुका था। इस मत के अनुसार, जैसे ही कुरनेलियुस और उसके साथियों ने विश्वास किया, उनका उद्धार हो गया और परमेश्वर ने प्रमाणित करने के लिए कि ऐसा ही था, आत्मा को भेज दिया।[51] इस प्रस्ताव को कभी-कभी यह प्रमाणित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक नहीं है, क्योंकि आत्मा अन्यजातियों के पानी में बपतिस्मा लेने से पहले आया।

इस स्थिति में कई आपत्तियां देखी जा सकती हैं। पहली यह कि हम पूरी तरह से निश्चित नहीं हो सकते कि आत्मा *कब* आया। प्रेरितों 11 में, पतरस ने ''आरम्भ से क्रमानुसार'' (11:4)[52] ब्यान करते हुए कि क्या हुआ, कहा ''जब मैं बातें *करने लगा,* तो पवित्र आत्मा उन पर ... उतरा ...'' (11:15)। द न्यू सैंचुरी वर्ज़न में, ''जब मैंने अपना संदेश आरम्भ किया, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा '' है। द लिविंग बाइबल में यह ''जैसे ही मैं संदेश देने लगा, पवित्र आत्मा उन पर उतरा'' है। अन्य शब्दों में, यह सम्भव है कि आत्मा कुरनेलियुस और उसके घराने पर पतरस के इस प्रचार से *पहले* उतरा कि यीशु ने अन्यजातियों के लिए क्या किया और उस पर विश्वास करना क्यों ज़रूरी है।[53] यदि ऐसा है, तो इससे यह सुझाव मिलेगा कि उद्धार के लिए न केवल बपतिस्मा ही अनावश्यक है, बल्कि यह भी कि उद्धार के लिए *विश्वास* भी ज़रूरी नहीं है।[54]

इस स्थिति के साथ एक और आपत्ति यह है कि यह कहानी एक चमत्कारी प्रदर्शन पर अत्यधिक ज़ोर देती है और दूसरों की कम या अधिक उपेक्षा करती है। बुनियादी तौर पर तर्क यह है कि परमेश्वर ने उद्धार न पाए हुए लोगों पर आत्मा नहीं भेजना था। यह तर्क क्यों नहीं कि परमेश्वर ने उद्धार न पाए हुए मनुष्य के पास स्वर्गदूत को नहीं भेजना था?

यदि पानी के बपतिस्मे से पहले आत्मा को भेजना यह प्रमाणित करता है कि बपतिस्मा आवश्यक नहीं, तो यीशु में विश्वास लाने से पहले कुरनेलियुस के पास स्वर्गदूत को भेजना यह प्रमाणित करता है कि विश्वास भी ज़रूरी नहीं है।

इस स्थिति के साथ मुख्य कठिनाई यह है कि पद में यह संकेत नहीं है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का उद्देश्य कुरनेलियुस के उद्धार की घोषणा करना था। दूसरी ओर, यह संकेत है कि घटना का उद्देश्य अन्यजातियों को स्वीकार करने के लिए यहूदी मसीहियों को तैयार करना था। हम किसी वस्तु के इस्तेमाल से उसके उद्देश्य के बारे में निश्चित हो सकते हैं (यद्यपि मैंने पहले कभी कुर्सी नहीं देखी थी, यह देखकर कि उसका क्या उपयोग होता है, मैं जल्दी से इसके उद्देश्य के बारे निश्चित हो गया)। तीन विभिन्न अवसरों पर (10:47, 48; 11:17; 15:8, 9) पतरस ने घटना को यह प्रमाणित करने के लिए प्रयुक्त किया कि परमेश्वर अन्यजातियों को स्वीकार करना चाह रहा था, और इस प्रकार कलीसिया को भी उन्हें स्वीकार कर लेना चाहिए। इसलिए, आश्चर्यकर्म का उद्देश्य *वही* था।

कइयों ने प्रेरितों 10 को ''अन्यजाति लोगों का पिन्तेकुस्त'' कहा है, परन्तु कुरनेलियुस के घर की घटनाएं *पहले* पिन्तेकुस्त के अनुभव में अन्यजातियों की भागीदारी के रूप में कोई दूसरा पिन्तेकुस्त नहीं था। प्रेरितों 2 में पतरस ने यह कहते हुए योएल को उद्धृत किया था कि आत्मा ''*सब* मनुष्यों'' (2:17) पर उंडेला जाना था। अभी तक, केवल *यहूदियों* (मनुष्य जाति का एक छोटा सा भाग) को ही पवित्र आत्मा मिला था।[55] अब, आत्मा *अन्यजाति* के प्रतिनिधियों पर भी उंडेला गया था! परमेश्वर ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर दी थी कि वह ''किसी का पक्ष *नहीं* करता''! क्या कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन के समय होने वाली अद्‌भुत घटनाएं आज हर एक मनपरिवर्तन के समय होनी चाहिए? नहीं। परमेश्वर ने एक बार अपनी बात रख दी, इसे बार-बार प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं थी।

आइए अपनी कहानी की ओर लौटें। पतरस के प्रवचन के दौरान, किसी समय अपनी बात बताने के लिए, परमेश्वर ने पतरस के सुनने वालों के ऊपर पवित्र आत्मा भेजा। प्रेरितों 10:45 उन *छह यहूदी गवाहों* की प्रतिक्रिया बताता है: ''और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए हुए थे वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया था।'' 11:16, 17 में, हम उस समय के *पतरस के* विचारों की प्रक्रियाओं को पढ़ते हैं, ''तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उसने कहा; कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। सो जब परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?''

एक भले मनुष्य का उद्धार होता है (10:47, 48)

पतरस ने छह यहूदी मसीहियों की ओर मुड़कर, जो अन्यजातियों के भाषाएं बोलने के दृश्य से हक्के-बक्के रह गए थे पूछा: ''क्या कोई जल को रोक सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है?'' (10:47)। पतरस उन लोगों से *वोट* डालने के लिए नहीं कह रहा था कि कुरनेलियुस और उसके घराने को

स्वीकार किया जाए या नहीं। यह एक बड़े ही आकर्षक रूप से किया गया प्रश्न था जिसके उत्तर का पहले ही से पता था कि परमेश्वर का विरोध किए बिना उनको बपतिस्मा देने से इन्कार करने की कोई बात ही नहीं थी! पतरस को उन छह गवाहों के उत्तर की आशा नहीं थी, और उन्होंने उत्तर दिया भी नहीं। उनको तो होने वाली उस घटना के लिए बराबर के ज़िम्मेदार ठहराया जाना था।

मैं कल्पना करता हूं कि कुरनेलियुस और उसके मित्रों की ओर मुड़ते समय पतरस के चेहरे पर मुस्कान थी और उसकी बाहें खुली हुई थीं। पतरस को उन्हें वह वचन बताने के लिए भेजा गया था जिससे उनका उद्धार होना था (11:14); अब उसने उन वचनों को समाप्त किया: ''और उस ने आज्ञा दी[56] कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए'' (10:48क)। पतरस ने टिप्पणी की थी कि विश्वास करने वालों को ''उसके *नाम के द्वारा*'' पापों की क्षमा प्राप्त होगी (10:43)। अब कुरनेलियुस और उसके घराने को ''यीशु मसीह के *नाम में*'' बपतिस्मा दिया जाना था।

कुरनेलियुस और अन्यों को बपतिस्मा क्यों दिया गया? कई लोग जो कलीसिया के स्वभाव को नहीं समझते, कहते हैं कि उनका बपतिस्मा (1) इस बात का चिह्न था कि उनका पहले ही उद्धार हो चुका था और (2) इस प्रकार से उन्हें कलीसिया का एक भाग बनाया गया था। जो बपतिस्मे को इस नज़रिए से देखते हैं, वे यह समझने में असफल हो जाते हैं कि कलीसिया उद्धार पाए हुए लोगों की एक देह है;[57] बपतिस्मा जो किसी व्यक्ति का उद्धार करता है, स्वत: ही उसे कलीसिया का सदस्य बना देता है। उद्धार पाने तथा कलीसिया का सदस्य बनने के लिए एक ही प्रक्रिया है, दो नहीं।

पतरस के यह कहने से कि, ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता'' (10:35) कुरनेलियुस के मित्रों के बपतिस्मे के उद्देश्य को परिभाषित किया गया। अन्यजातियों को प्रेरितों 10 में उन्हीं कारणों से बपतिस्मा दिया गया था जिन से प्रेरितों 2 में यहूदियों को दिया गया था अर्थात (1) पापों की क्षमा के लिए, (2) दान के रूप में पवित्र आत्मा पाने के लिए, और (3) प्रभु की कलीसिया में मिलाए जाने के लिए (2:38, 41, 47)।[58]

यदि विश्वास की आवश्यकता पर बोलने के तुरन्त बाद पतरस को रोका न जाता (आयत 43), तो वह अपने सुनने वालों को बपतिस्मा देने की आज्ञा दे देता (आयत 48)। यह वृत्तांत यीशु के शब्दों के साथ पूरी तरह मेल खाता है: ''जो *विश्वास करे* और *बपतिस्मा ले* उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16क)। पूरा प्रकरण खूबसूरती से गलतियों की पत्री में पौलुस की शिक्षा को चित्रित करता है: ''क्योंकि तुम सब उस *विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है,* परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने *मसीह में बपतिस्मा* लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। अब *न कोई यहूदी रहा और न यूनानी*; ... क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'' (गलतियों 3:26-28)।

कैसरिया में पिन्तेकुस्त के उस ऐतिहासिक दिन होने वाले बपतिस्मों से कम संख्या में बपतिस्मे हुए, परन्तु फिर भी यह एक उत्साह भरा अवसर था क्योंकि जिन्होंने पतरस की बात पर ध्यान लगाया था, उन्होंने यीशु में बपतिस्मा लिय था! तात्पर्य यह है कि उनमें

से *सभी ने* बपतिस्मा लिया; यदि ऐसा हुआ, तो यह प्रेरितों की पुस्तक में एक ही बार है कि एक प्रचारक ने काफ़ी बड़े समूह को सम्बोधित किया और उन सभी ने मसीह को ग्रहण कर लिया था![59]

कहानी इन शब्दों के साथ समाप्त होती है: ''तब उन्होंने उस से बिनती की कि कुछ दिन हमारे साथ और रह'' (10:48ख)। नये बने मसीही यीशु के विषय में और जानना चाहते थे और उनकी इच्छा को पूरा करने के लिए पतरस भी खुश था।[60] भला यीशु ने नहीं कहा था कि लोगों को सुसमाचार सिखाने और बपतिस्मा देने के बाद उन्हें वह *सब* सिखाया जाए जिसकी उसने आज्ञा दी थी (मत्ती 28:19, 20)? तथापि, और शिक्षा देने के अलावा वहां ठहरने के कुछ और भी कारण थे। यहूदी/अन्यजाति संगति अभी भी कमज़ोर थी; इसे दृढ़ करने की आवश्यकता थी। पतरस ने कुरनेलियुस के घर की दहलीज़ पार करके एक बहुत बड़ा कदम उठाया था। अब कई दिनों के लिए वह उस घर में *ठहरा* रहा और यहां तक कि उसने वह सब कुछ *खाया* जो अन्यजाति लोग खाते थे! (देखिए 11:3.) अपने जीवन में पहली बार दोपहर के भोजन में उसने सूअर के मांस का सैंडविच खाया होगा! यदि उसने खाया तो उसने सम्भवत: पहले निवाले में श्वास रोक लिया होगा परन्तु मुझे यकीन है कि उसने इसे किसी न किसी तरह निगल लिया होगा! आखिर यहूदियों और अन्यजातियों की दीवारें गिर रही थीं![61]

सारांश

आप कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन की कहानी पढ़ते हुए, उसके साथ होने वाले आश्चर्यकर्मों में न फंस जाएं। मनपरिवर्तन की प्रत्येक घटना में प्रासंगिकताएं और अनिवार्यताएं हैं। प्रासंगिकताएं उस घटना का विशेष विवरण हैं! अनिवार्यताएं मनपरिवर्तन का विवरण हैं, जो कि उद्धार के लिए जरूरी हैं। प्रासंगिकताएं हर घटना में अलग-अलग होती हैं; अनिवार्यताएं वही रहती हैं।[62] ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता'' (10:35ख); उसने मनुष्यों में ''कुछ भेद न रखा'' (15:9)। कुरनेलियुस और उसके मित्रों का उद्धार बिल्कुल उसी प्रकार हुआ जैसे उनसे पहले हर एक व्यक्ति का हुआ था और जैसे उनके बाद के हर एक व्यक्ति का होगा। उन्हें विश्वास करके (10:43; 15:11),[63] मन फिराना (11:18), और बपतिस्मा (10:48) लेना पड़ा था। इस प्रकार परमेश्वर के अनुग्रह से उनका उद्धार हुआ (15:11); परमेश्वर के अनुग्रह से मेरा और आपका उद्धार ऐसे ही हो सकता है!

यदि *आपने* अब तक प्रभु की बात नहीं मानी है, तो अभी क्यों नहीं मान लेते?

विजुअल-एड नोट्स

पाठ के अन्त में, आप संक्षेप में बोर्ड पर यह सरल सी रूपरेखा बनाने की इच्छा कर सकते हैं:

कुरनेलियुस का उद्धार कैसे हुआ?
- उसके अच्छे जीवन से? नहीं।
- आश्चर्यकर्म के प्रदर्शनों से? नहीं।
- भरोसा करके आज्ञा मानने से? हां।
  - वचन को सुनना (11:14)।
  - विश्वास करना (10:43)।
  - मन फिराना (11:18)।
  - बपतिस्मा लेना (10:48)।
- क्या उसका उद्धार अनुग्रह से हुआ था? हां! (15:11)

अमेरिका में रहने वालों के लिए, अंकल सैम का ''आई वान्ट यू [अर्थात मुझे आपकी आवश्यकता है]!'' पोस्टर समाप्ति के लिए चित्रों द्वारा समझाने हेतु सहायक होगा। शायद सेना के किसी कार्यालय में कोई इस प्रकार का पोस्टर ढूंढने में आपकी सहायता कर सके। यदि आपको इसका प्रिंट न मिले, तो शायद आपका कोई कलाकार मित्र आपके लिए ऐसा रेखाचित्र बना सकता हो।

प्रवचन नोट्स

बहुत से लोगों को यह अहसास नहीं होता कि अच्छा प्रवचन देने के लिए अच्छे वक्ता के साथ-साथ अच्छे श्रोता भी होने चाहिए। कई प्रकार से सुनने वाले बोलने वालों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। ''एक आदर्श श्रोता'' पर प्रचार करने के लिए अध्याय 10 की 33 आयत का उपयोग किया जा सकता है: (1) ''हम सब यहां हैं।'' हमारी कितनी इच्छा है कि हर मण्डली में यह बात सच हो (इब्रानियों 10:25)! हमारी कितनी प्रबल इच्छा है कि हर कोई कुरनेलियुस की तरह अपने मित्रों और परिवार को निमन्त्रण दे! (2) ''परमेश्वर के सामने।'' सभी को यह समझने की आवश्यकता है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में हैं और वह हम सभी को देखता है (तु. मत्ती 18:20; 1 कुरिन्थियों 5:4)। हमारा उद्देश्य अपने आपको नहीं, बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करना है! (3) ''ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है।'' एक अच्छा प्रवचन वह नहीं है जो हमें सुनने में अच्छा लगे बल्कि वह है जिसकी *परमेश्वर ने* आज्ञा दी है अर्थात उस आज्ञा का कुछ *भाग* नहीं, बल्कि *सारी* की सारी आज्ञा! (4) ''सुनें।'' जब परमेश्वर के वचन से कोई प्रवचन दिया जा रहा होता

है, तो यह समय मिलने-मिलाने या अतिथि सत्कार करने का नहीं, बल्कि सुनने का होता है। संचार की प्रक्रिया के लिए अच्छे सुनने वालों का होना बहुत आवश्यक है।

इस पाठ में कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन के असाधारण पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए पतरस के प्रवचन को लिया गया है। पतरस के प्रवचन से एक बहुत अच्छा अतिरिक्त अध्ययन बन जाएगा। आपकी इस प्रकार की प्रस्तुति की तैयारी के लिए मैंने काफ़ी टिप्पणियां शामिल की हैं।

पादटिप्पणियां

[1]दूसरा सबसे लम्बा वृत्तांत पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों के मनपरिवर्तन का है (1 अध्याय, 47 आयतें)। कुरनेलियुस का मनपरिवर्तन पूरा एक अध्याय (48 आयतें) लेता है और कहानी को दोबारा अगले पाठ में (18 आयतें) बताया जाता है। शाऊल का मनपरिवर्तन अध्याय 9 में केवल 19 आयतें लेता है, और उसे अध्याय 22 और 26 में बताने के बाद भी, कुल जोड़ केवल 38 आयतें ही रहता है। [2]वास्तव में, बहुत से विवरण दो से *अधिक* बार दिए गए हैं (जैसे कुरनेलियुस को स्वर्गदूत का दर्शन)। शाऊल के मनपरिवर्तन की कहानी फिर से बताई गई है, लेकिन कई अध्यायों के बाद। [3]घूस लेना रोमी सेना के जीवन का एक अंग था, परन्तु कुरनेलियुस ने स्वयं को इस प्रकार के भ्रष्टाचार से दूर रखा था। [4]कुरनेलियुस की तुलना लूका 7:2-5 में सूबेदार से कीजिए। [5]एक यहूदी कहता, ''उसे केवल इतना ही करना है कि वह ख़तना करवा ले!'' [6]ऐक्सपैंडड वैस्टर्न टैक्स्ट कहता है कि ''कि दासों में से एक भागकर आगे आया और घोषणा की कि वह [पतरस] पहुंच गया था।'' [7]एक और सम्भावना है कि कुरनेलियुस ने याफा में संदेशवाहकों को भेजने के बाद तुरन्त अपने मित्रों को परमेश्वर के वक्ता के पहुंचने से पहले लम्बी प्रार्थना और आराधना के लिए बुला लिया। [8]10:25 में युनानी शब्द का अनुवाद ''प्रणाम'' उसी मूल शब्द से बना है जिससे इफिसियों 5:33 में शब्द ''अपने पति का *भय*।'' [9]सूबेदार फलस्तीन की सेना में था। [10]पतरस ने कुरनेलियुस के झुकने का कारण नहीं पूछा और कहता है, ''यदि तुम्हें लगता है कि मैं परमेश्वर का एक *प्रतिनिधि* हूं, तो मैं हूं।'' पतरस ने स्पष्ट शब्दों में उसे खड़ा होने के लिए कहा!

[11]देखिए प्रकाशितवाक्य 19:20; 22:8, 9. मैं रोम में गया हूं। वहां मैंने धातु से बनी पतरस की एक प्रतिमा देखी, जिसका पैर अन्धविश्वासी लोगों द्वारा चूमने से लगातार घिस रहा है। पतरस तो भयभीत हो उठता! इसकी प्रासंगिकता परमेश्वर के *किसी* भी दास से हो सकती है जो अपनी खुशामद की झड़ी लगाने की अनुमति देता है जिसका अधिकार केवल परमेश्वर को है। कलीसिया में पतरस को सबसे ऊंचा ''पद'' (प्रेरित का कार्य) मिला था परन्तु *फिर भी* कुरनेलियुस को अपने आगे झुकने की उसने अनुमति नहीं दी। [12]आयत 28 के शब्द सम्भवत: उन छह यहूदी भाइयों के लाभ के लिए बोले गए जो उसके साथ वहां जमा हुए अन्यजातियों की खातिर आए थे। यदि सभी नहीं, तो वहां उपस्थित लोगों में से अधिकतर लोग कुरनेलियुस की तरह ''परमेश्वर का भय मानने वाले'' थे और वे आराधनालय की सभाओं में भाग लेते होंगे। वे यहूदियों की व्यवस्था और परम्परा दोनों को मानते होंगे। [13]यूनानी शब्द का अनुवाद ''अन्यजाति'' का प्रयोग *खतनारहित फलस्तीनियों* के लिए सप्तति अनुवाद (पुराने नियम के यूनानी अनुवाद) में किया जाता था। यह बात उपहास की थी और पतरस द्वारा उस पूर्वधारणा पर ज़ोर देने के लिए इसका उपयोग किया गया होगा जिस पर काबू पाया जाना था। [14]पतरस बिना कोई विरोध किए चल पड़ा। [15]यहूदी गणना के अनुसार, एक भाग सम्पूर्ण के बराबर होता था। पहला दिन वह दिन था जब स्वर्गदूत कुरनेलियुस पर प्रकट हुआ। दूसरा वह था जब पतरस को दर्शन मिला। तीसरा दिन वह था जब पतरस और उसके साथियों ने यात्रा की। चौथा दिन वह था जब पतरस और दूसरे लोग कैसरिया में पहुंचे। [16]पहले तो, वाक्यांश ''मुंह खोल कर'' अजीब लगता है (अपना मुंह बन्द करके वह कैसे बोल सकता था?) तथापि, ''मुंह खोल

कर,'' नये नियम में कोई प्रभावशाली प्रवचन बोलने के लिए प्रयुक्त एक प्रारम्भिक कदम था। [17]वर्तमान अभिव्यक्ति ''चेहरे को देखना'' में 10:34 में उपयुक्त यूनानी शब्द के नकारात्मक तात्पर्य नहीं हैं। [18]1 पतरस 1:17. इस सम्बन्ध में हमें परमेश्वर का अनुकरण करना है (याकूब 2:1-13)। [19]देखिए आमोस 9:7 और मीका 6:8. [20]''भाता'' शब्द का अर्थ है ''स्वीकार्य।''

[21]लूका ने जिस प्रकार प्रवचन को दर्ज किया है, उसे ऊंचा पढ़ने के लिए एक मिनट से कम समय लगता है। एक बार फिर, हम आत्मा के प्रेरणा प्राप्त लूका के सम्पादन को देखते हैं। तथापि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए, कि यूनानी शास्त्र में पद 36 से 38 में अकुशलता और अरामी भाषा में बहुत सी अभिव्यक्तियों की उपस्थिति यह प्रमाणित करती है कि लूका ने इस प्रवचन का आविष्कार नहीं किया। यह उस सब का सार है जो वास्तव में पतरस ने कहा। [22]एक अन्यजाति श्रोता के इस प्रवचन में, पतरस ने यहूदी श्रोताओं में प्रवचनों से अधिक समय यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई पर दिया। [23]यह उस शब्द की ओर संकेत करता है जिसे *पहले* ''परमेश्वर के पुत्रों'' (यहूदियों) के पास भेजा गया था। [24]तु. इफिसियों 2:17। [25]इसमें अन्यजाति शामिल थे। [26]हो सकता है कि कैसरिया की ओर जाते हुए पतरस को संदेशवाहकों ने बताया हो कि वे यीशु के बारे में कुछ जानते थे, या उसने *मान लिया* हो कि उन्हें प्रारम्भिक ज्ञान था क्योंकि (1) वे यरूशलेम से केवल सत्तर मील या इससे कम दूरी पर रहते थे, (2) यीशु ने व्यापक यात्रा की थी, और (3) निश्चय ही फिलिप्पुस कैसरिया में प्रचार करता था। उन्हें अवश्य ही *कुछ* पता चला होगा कि यीशु ने क्या किया था, परन्तु अब पतरस ने उन्हें *और* बताना था। [27]आम तौर पर ध्यान दिया गया है कि कुरनेलियुस को पतरस का प्रवचन मरकुस रचित सुसमाचार की रूपरेखा की तरह ही है (जो कि पारम्परिक रूप से मरकुस द्वारा लिखा पतरस का सुसमाचार है। पतरस का प्रवचन यूहन्ना के बपतिस्मे से आरम्भ होता है [जो कि मरकुस करता है])। तथापि, दोनों की तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि मरकुस की पुस्तक जी उठने के बाद के दर्शनों या इस तथ्य का उल्लेख नहीं करती कि यीशु ने चेलों के साथ खाया और पीया। प्रेरितों 10 के प्रवचन में पतरस द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार। [28]''यहूदिया'' में सारा फलस्तीन शामिल था। [29]परमेश्वर ने यीशु का अभिषेक पवित्र आत्मा से किया जब उसने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया (लूका 3:21, 22; 4:18, 19)। ''परमेश्वर ने उसका अभिषेक किया'' का अर्थ है कि ''परमेश्वर ने उसे मसीह बनाया।'' [30]इस प्रवचन में ज़ोर (जैसा कि मरकुस की पुस्तक में भी है) इस पर है कि यीशु ने क्या *किया,* न कि इस पर कि उसने क्या *सिखाया*। जितनी महत्वपूर्ण यीशु की शिक्षा है, उतना ही महत्वपूर्ण वह काम है जो उसने *किया* (क्रूस पर उसकी मृत्यु) जिससे हमारा उद्धार होता है, न कि वह जो उसने सिखाया। जो कुछ यीशु ने सिखाया उसे सिखाने के लिए परमेश्वर किसी और को भी भेज सकता था, परन्तु हमारे लिए मर केवल यीशु ही सकता था!

[31]यीशु ने फलस्तीन में रहने वाले हर बीमार को चंगा नहीं किया, सो ''सब'' का अर्थ है कि ''सब जिन्हें चंगा करने का उसने प्रयत्न किया'' या ''*उन सब में से* जो रोगी थे।'' [32]वचन में कभी-कभी कुछ विशेष शारीरिक कष्टों को शैतान के काम बताया गया है (तु. लूका 13:16; 2 कुरिन्थियों 12:7; अय्यूब की पुस्तक)। इसका अर्थ यह नहीं कि हर बीमारी शैतान के कारण ही है, न ही इसका अर्थ यह है कि बीमारी का कोई लाभ नहीं है (भजन संहिता 119:67, 71)। ''सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा'' में उनकी *आत्मिक* चंगाई भी हो सकती है जिनके *मन* शैतान के शिकंजे में थे। [33]यूहन्ना 3:2. [34]अन्य शब्दों में, ''तुम ने इन बातों के विषय में *सुना* है, परन्तु हमने वास्तव में उन्हें *देखा* है और जानते हैं कि वे सत्य हैं।'' [35]मूलत:, शास्त्र में ''वृक्ष पर'' है (देखिए व्यवस्थाविवरण 21:22, 23)। [36]''प्रगट कर दिया'' वचन का अक्षरश: अनुवाद है। यह सुझाव देता है कि यीशु की जी उठी देह अदृश्य होती यदि गवाहों को देख सकने के लिए परमेश्वर इसे दृश्यमान न करता। [37]कइयों ने सुझाव दिया है कि यीशु केवल उन्हीं पर प्रकट हुआ जो उसे जानते थे यह तथ्य इस दावे को कमज़ोर कर देता है कि वह वास्तव में जी उठा। फिर भी यह जानने के लिए कि यह वास्तव में यीशु ही *था* दूसरा कौन इसके योग्य था? यह तथ्य कि वह पहले चुने हुए गवाहों पर प्रकट हुआ, इस सत्य को हानि *केवल* तब पहुंचाता यदि यह प्रमाणित किया जा सकता कि गवाह अविश्वसनीय थे, या उन्हें यीशु को देखने का दावा करने से कुछ लाभ होना होता। दोनों में से

कोई भी बात प्रमाणित नहीं की जा सकती है। [38]लूका *शारीरिक* पुनरुत्थान को सब प्रमाणों से अधिक कायल करने वाला मानता था (लूका 24:41-43)। क्या एक दर्शन या शरीर-रहित छाया मछली खा सकती थी? [39]मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16. प्रेरितों के काम में ''लोगों'' का अर्थ आम तौर पर यहूदी होता था, परन्तु यहां इसका अर्थ ''*सब* लोग'' अर्थात, यहूदी और अन्य जाति है। [40]प्रेरितों के काम में यह पहली बार है कि यीशु का प्रचार न्यायी के रूप में किया गया, परन्तु यह अन्तिम बार नहीं होगा (17:31)। ध्यान दें 2 तीमुथियुस 4:1; 1 पतरस 4:5.

[41]पतरस ने सम्भवत: उन कुछ भविष्यवक्ताओं का उल्लेख किया जैसा कि उसने पिछले प्रवचनों में किया था (प्रेरितों 2; 3)। परमेश्वर का भय मानने वाले ये लोग उन भविष्यवक्ताओं से परिचित होंगे। [42]आयत 43 में ज़ोर ''उस'' और ''उसके'' पर है: उद्धार केवल *मसीह के द्वारा* है। उनके बारे में जो आज मूर्तिपूजक धर्मों को मानते हैं, कइयों को यह कहना अच्छा लगता है कि ''उनका धर्म हमारी संस्कृति का भाग है और हमें उनकी संस्कृति के साथ छेड़-छाड़ नहीं करनी चाहिए।'' साधारणत: हमें लोगों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों के निकट रहने के लिए उत्साहित करना चाहिए, परन्तु जब *धर्म* की बात आती है, तो हमें समझना चाहिए कि, मूर्तिपूजक धर्म कितने भी ''रंगीन'' क्यों न हों, वे उद्धार कभी नहीं दिला सकते! उद्धार केवल ''यीशु के नाम के द्वारा है''! [43]सम्भवत: पतरस भी चकित था। पतरस का उल्लेख नहीं है क्योंकि अब बल यहूदी मसीहियों पर था। पतरस तो दर्शन और आत्मा की बातों से कायल हो चुका था। आत्मा के बहाए जाने का उद्देश्य उन छह पुरुषों को कायल करना था जो पतरस के साथ आए थे। [44]वे सम्भवत: ''परमेश्वर को महिमा दे रहे'' थे क्योंकि परमेश्वर ने पतरस के द्वारा घोषणा की थी कि वह अन्यजातियों को स्वीकार करना चाहता था! [45]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में 2:38 पर नोट्स देखिए। [46]1:4, 5 में यीशु की ये बातें एक बार तो मिलती हैं लेकिन दूसरी बार के बारे में हमें नहीं पता। NASB का अनुवाद सही है, यहां पर क्रिया का अनुवाद है; जो संकेत देता है कि यीशु ने एक से अधिक बार कहा। [47]10:46 में ''भांति-भांति की भाषा'' कहा गया है। [48]यूनानी शब्द का अनुवाद ''वही'' *isos* से है, जिसका अर्थ ''समद्विबाहु त्रिकोण'' (दो समान भुजाओं वाले त्रिकोण) की तरह ''वही, बराबर,'' है। [49]पिन्तेकुस्त के दिन की तरह, जो कुछ वे कह रहे थे सुनने वाले उसे समझ सकते थे क्योंकि दोनों अवसरों पर भाषाएं बोलने वाले जो कुछ कह रहे थे सुनने वालों को वह *समझ* आ रहा था (2:11; 10:46)। [50]कइयों ने *आग* के जैसे आत्मा के आने को कुरनेलियुस और उसके मित्रों के पाप के ''भस्म होने'' के रूप में चित्रित किया है। कई बार इस स्थिति के विषय में 15:8, 9 को उद्धृत किया जाता है, परन्तु पद कहता है कि उनके हृदय *विश्वास* से शुद्ध हुए थे, न कि आत्मा से।

[51]इस दावे के सम्बन्ध में कई बार यूहन्ना 14:16,17 का उपयोग किया जाता है: ''संसार पवित्र आत्मा को नहीं पा सकेगा और इसलिए कुरनेलियुस और उसका घराना अब संसार के भाग नहीं थे।'' ''संसार'' जैसे कि यूहन्ना 14 में कहा गया है प्रेरितों के शत्रुओं की ओर संकेत है जिनके हृदय कठोर हो चुके थे। कुरनेलियुस प्रेरितों का शत्रु नहीं था और न ही उसका हृदय कठोर न था। यूहन्ना 14:17 में मुख्य वाक्यांश का अनुवाद ''जिसे संसार तुम से ले नहीं सकता'' हो *सकता* है। [52]यूनानी शब्द का अनुवादित वाक्यांश ''क्रमानुसार'' का अर्थ ''कालक्रमानुसार'' हो सकता है। [53]यह सम्भव है कि यहूदी गवाहों को कायल करना आवश्यक था और यह परमेश्वर की इच्छा थी कि पतरस अन्यजातियों में *प्रचार करे*। [54]कुरनेलियुस और उसका घराना संभवत: पवित्र आत्मा के उन पर आने से पहले विश्वास करते थे (11:17), परन्तु कम से कम 11:4, 15 में पतरस के शब्द इस सम्भावना का संकेत देते हैं कि वे विश्वास नहीं करते थे। यदि आत्मा के आने का उद्देश्य यहूदियों को कायल करना था कि परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी स्वीकार कर लिया है तो यह महत्वहीन है । तथापि, आत्मा का आना उनके *आड़े आता* है जिसका मानना है कि इसका उद्देश्य यह प्रमाणित करना था कि अन्यजातियों का उद्धार *पहले* ही हो चुका था। जो यह मानते हैं कि कुरनेलियुस की घटना यह प्रमाणित करती है कि बपतिस्मा अनिवार्य नहीं है वे निश्चित रूप से यह प्रमाणित नहीं कर सकते कि आत्मा 10:43 से पहले के बजाय बाद में आया। [55]पहले तो, प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था; फिर, प्रेरितों ने अन्यों पर हाथ रखे (8:18)। शायद हम उन सभी को भी शामिल कर पाते जिन्होंने

बपतिस्मा लिया था जिन्हें आत्मा का ''साधारण'' (गैर-चमत्कारी) दान मिला था (2:38); अभी तक, केवल यहूदियों का ही बपतिस्मा हुआ था।[56]अधिकतर अनुवादकों का मानना है कि यह आज्ञा कुरनेलियुस और उसके घराने के लिए थी। तथापि, मूल शास्त्र का अनुवाद उन छह यहूदी मसीहियों के कुरनेलियुस और उसके मित्रों को बपतिस्मा देने की आज्ञा के रूप में हो *सकता* है। साधारणत:, सम्प्रदायों के आरम्भ होने के भय से (तु. 1 कुरिन्थियों 1:14, 15), प्रेरित स्वयं लोगों को बपतिस्मा देने से परहेज करते थे।[57]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में 2:41, 47 पर नोट्स देखिए; बाद के एक भाग में 20:28 पर नोट्स देखिए।[58]कइयों का कहना है कि परमेश्वर ने प्रेरितों 10 से मनुष्य के उद्धार के लिए ''नये नियम'' ठहरा दिए और आयत 2:38 आज हम पर लागू नहीं होती क्योंकि ''वह तो मसीहियत के आरम्भिक दिनों में केवल यहूदियों के लिए थी।'' यह सोच 10:34, 35 और 15:9 की उपेक्षा करती है। मसीहियत के आरम्भ से ही, हर किसी का उद्धार एक ही प्रकार से हुआ है![59]*यदि* उनमें से सबका बपतिस्मा हुआ, तो इस आश्चर्यजनक आंकड़े की व्याख्या निश्चित ही वह *व्यवहार* है जो उनका था (10:33)।[60]वैस्टर्न टैक्स्ट संकेत देता है कि पतरस कैसरिया में काफी समय तक ठहरा।

[61]काश मैं कह सकता कि प्रेरितों 10 की घटनाओं से अन्यजायितों को स्वीकार करने के बारे में कलीसिया में उठने वाले सभी प्रश्न सदा के लिए शांत हो गए, परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, ऐसा हुआ नहीं। फिर भी, बड़े कदम उठाए गए, और शीघ्र ही मनुष्यों को अन्यजातियों में सुसमाचार के प्रचार के लिए हर जगह भेजा जाना था (11:20)।[62]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 77 पर मनपरिवर्तन का एक उद्देश्य यह दिखाना है कि उसमें क्या आवश्यक है। वे तत्व ही अनिवार्य हैं जो मनपरिवर्तन के विस्तारित वृत्तांतों में बार-बार आते हैं।[63]जैसे पहले ध्यान दिया गया था; मन का विश्वास होंठों पर विश्वास को व्यक्त करने से जुड़ा हुआ था (रोमियों 10:9, 10)।